पाठ–5

भोलाराम का जीव

हरिशंकर परसाई

जन्म – 1924

मृत्यु – 1995

लेखक परिचय

हरिशंकर परसाई हिन्दी के पहले रचनाकार हैं, जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया और उसे हल्के–फुल्के मनोरंजन की परम्परागत परिधि से उबार कर समाज के सामयिक प्रश्नों से जोड़ा। उनकी व्यंग्य रचनाएँ हमारे मन में गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमें उन सामाजिक वास्तविकताओं के सामने खड़ा करती हैं, जिनसे किसी भी व्यक्ति का अलग रह पाना असम्भव है। सामाजिक पाखंड और रूढ़िवादी जीवन मूल्यों की खिल्ली उड़ाते हुए, उन्होंने सदैव विवेक और विज्ञान सम्मत दृष्टि को सकारात्मक रूप में प्रस्तुत किया है । उनकी भाषा शैली में खास किस्म का अपनापन है, जिससे पाठक लेखक के साथ एकात्मकता का अनुभव करता है।

कृतियाँ

हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव, रानी नागफनी की कहानी, भूत के पाँव पीछे, तट की खोज, वैष्णव की फिसलन, सदाचार का ताबीज, विकलांग श्रद्धा का दौर।

पाठ परिचय –

लेखक ने अपने एक परिचित रिटायर्ड कर्मचारी की दुःख पूर्ण यथार्थ घटना से प्रेरित होकर इस कहानी की रचना की । कहानी का कथानक इतना है कि– 'भोलाराम के जीव की तलाश स्वर्ग में हो रही है, मगर उसका जीव यमदूत को चकमा देकर अपनी पेंशन की फाइल में घुस गया। जीव की तलाश करते हुए नारद आते हैं और साहब को घूस में अपनी वीणा देकर दबी फाइल निकलवाते हैं। फाइल में चिपके भोलाराम के जीव से स्वर्ग चलने के लिए कहते हैं। मगर भोलाराम का जीव कहता है कि मैं तो अपनी पेंशन की दरख्वास्तों में ही चिपके रहना चाहता हूँ।''

कहानी सौन्दर्य कथानक में न होकर उसके सहारे उभारे गए तीखे रिमार्क और चुटीले व्यंग्य के माध्यम से शासकीय ढाँचे की लाल फीता शाही, घूसखोरी और क्रूरता को उजागर करने का प्रयत्न किया है।

भारत की समाज व्यवस्था और प्रशासन तन्त्र का चित्रण इस कहानी में कुशलता और मार्मिकता के साथ किया गया। उसमें मार्मिकता में सनी मानवीय संवेदना भी है और तीखे व्यंग्य से तिलमिला देने वाली गम्भीर चोटें भी।

भोला राम का जीव

ऐसा कभी नहीं हुआ था.....

धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म और सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास स्थान 'अलॉट' करते आ रहे थे, पर ऐसा कभी नहीं हुआ था।

सामने बैठे चित्रगुप्त बार–बार थूक से पन्ने पलट कर रजिस्टर देख रहे थे। गलती पकड़ में नहीं आ रही थी। आखिर उन्होंने खीजकर रजिस्टर इतने जोर से बन्द किया कि मक्खी चपेटे में आ गई। उसे निकालते हुए वह बोले महाराज रिकॉर्ड सब ठीक है। भोलाराम के जीव ने पाँच दिन पहले देह त्यागी और यमदूत के साथ इस लोक के लिए रवाना भी हुआ, पर यहाँ अभी तक नहीं पहुँचा।

धर्मराज ने पूछा, ''और वह दूत कहाँ है ?'' ''महाराज वह भी लापता है।''

इसी समय द्वार खुले और एक यमदूत बहुत बदहवास–सा वहाँ आया। उसका मौलिक कुरूप चेहरा परिश्रम, परेशानी और श्रम के कारण और भी अधिक विकृत हो गया था। उसे देखते ही चित्रगुप्त चिल्ला उठे, अरे! तू कहाँ रहा इतने दिन? भोलाराम का जीव कहाँ है?

यमदूत हाथ जोड़कर बोला, ''दया–निधान मैं कैसे बताऊँ कि क्या हो गया? आज तक मैंने धोखा नहीं खाया था, पर इस बार भोलाराम का जीव मुझे चकमा दे गया। पाँच दिन पहले जब जीव ने भोलाराम की देह त्यागी, तब मैंने उसे पकड़ा और इस लोक की यात्रा आरम्भ की। नगर के बाहर ज्यों ही मैं उसे लेकर एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ, त्योंही मेरे चंगुल से छूटकर वह न जाने कहाँ चला गया। इन पाँचों दिनों में मैंने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर उसका कहीं पता नहीं चला।''

धर्मराज क्रोध से बोले, ''मूर्ख, जीवों को लाते–लाते बूढ़ा हो गया। फिर भी एक मामूली बूढ़े आदमी के जीव ने तुझे चकमा दे दिया।''

दूत ने सिर झुकाकर कहा, ''महाराज! मेरी सावधानी में बिल्कुल कसर नहीं थी, मेरे इन अभ्यस्त हाथों से अच्छे–अच्छे वकील भी नहीं छूट सके, पर इस बार तो कोई इन्द्रजाल हो गया।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''महाराज आजकल पृथ्वी पर इस प्रकार का व्यापार बहुत बना है। लोग दोस्तों को फल भेजते हैं और रास्ते में ही रेल्वे वाले उड़ा लेते हैं। हौजरी के पार्सलों के मोजे रेल्वे अफसर पहनते हैं। मालगाड़ी के डिब्बे के डिब्बे रास्ते में कट जाते हैं। एक बात और हो रही है। राजनीतिक दलों के नेता विरोधी नेता को उड़ाकर कहीं बन्द कर देते हैं। कहीं भोलाराम के जीव को भी तो किसी विरोधी ने, मरने के बाद भी खराबी करने के लिए नहीं उड़ा लिया?''

धर्मराज ने व्यंग्य से चित्रगुप्त की ओर देखते हुए कहा, ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गई। भोलाराम जैसे नगण्य, दीन आदमी से किसी को क्या लेना देना?''

इसी समय कहीं से घूमते–फिरते नारद मुनि वहाँ आ गये। धर्मराज को गुम–सुम बैठे देख बोले– ''क्यों धर्मराज! कैसे चिन्तित बैठे हैं ? क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई ?''

धर्मराज ने कहा, ''वह समस्या तो कभी की हल हो गई मुनिवर! नरक में पिछले सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गये हैं। कई इमारतों के ठेकेदार, जिन्होंने पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं। बड़े–बड़े इंजीनियर आ गये हैं, जिन्होंने ठेकेदार से मिलकर भारत की पंचवर्षीय योजना का पैसा खाया। ओवरसीयर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भर कर पैसा हड़पा, जो कभी काम पर गये ही नहीं।''

इन्होंने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं। यह समस्या तो हल हो गई। भोलाराम नाम के एक आदमी की पाँच दिन पहले ही मृत्यु हो गई। उसके जीव को यह दूत यहाँ ला रहा था कि जीव इसे रास्ते में चकमा देकर भाग गया। इसने सारा ब्रह्माण्ड छान डाला, पर वह कहीं नहीं मिला। अगर ऐसा होने लगा तो पाप–पुण्य का भेद ही मिट जायेगा।''

नारद ने पूछा, ''उस पर इन्कमटैक्स तो बकाया नहीं था? हो सकता है, उन लोगों ने रोक लिया हो।''

चित्रगुप्त ने कहा, ''इन्कम होती तो टैक्स होता,.....भुखमरा था।''

नारद बोले, ''मामला बड़ा दिलचस्प है अच्छा, मुझे उसका नाम पता तो बतलाओ! मैं पृथ्वी पर जाता हूँ।''

चित्रगुप्त ने रजिस्टर देखकर बताया, ''भोलाराम नाम था उसका, जबलपुर शहर के धमापुर मुहल्ले में नाले के किनारे एक डेढ़ कमरे के टूटे–फूटे मकान में वह परिवार समेत रहता था। उसके एक स्त्री थी, दो लड़के और एक लड़की, उम्र लगभग पैंसठ साल। सरकारी नौकर था, पाँच साल पहले रिटायर हो गया था।

मकान का किराया उसने एक साल से नहीं दिया था । इसलिए मकान मालिक उसे निकालना चाहता था कि इतने में भोलाराम ने संसार ही छोड़ दिया। आज पाँचवाँ दिन है। बहुत सम्भव है कि अगर मकान मालिक वास्तविक मकान मालिक है, तो उसने भोलाराम के मरते ही उसके परिवार को निकाल दिया होगा। इसलिए आपको परिवार की तलाश में काफी घूमना पड़ेगा।''

नारद भोलाराम के नगर में पहुँच गए।

माँ बेटी के सम्मिलित क्रन्दन से ही नारद भोलाराम का मकान पहचान गये।

द्वार पर जाकर उन्होंने आवाज लगाई, नारायण! नारायण! लड़की ने देखकर कहा– ''आगे जाओ महाराज!''

नारद ने कहा, ''मुझे भिक्षा नहीं चाहिए। मुझे भोलाराम के बारे में कुछ पूछताछ करनी है। अपनी माँ को जरा बाहर भेजो, बेटी !''

भोलाराम की पत्नी बाहर आयी। नारद ने कहा, ''माता भोलाराम को क्या बीमारी थी?''

''क्या बताऊँ? गरीबी की बीमारी थी। पाँच साल हो गये पेन्शन पर बैठे, पर पेन्शन अभी तक नहीं मिली। हर दस पन्द्रह दिन में एक दरख्वास्त देते थे, पर वहाँ से या तो जवाब नहीं आता था और आता तो यही कि तुम्हारी पेन्शन पर विचार हो रहा है। इन पाँच सालों में मेरे सब गहने बेच कर

हम लोग खा गये। फिर बर्तन बिके। अब कुछ नहीं बचा था। फाके होने लगे थे। चिन्ता में घुलते–घुलते और भूख से मरते–मरते दम तोड़ दिया।''

नारद ने कहा, '' क्या करोगी, माँ ? ..... उनकी इतनी ही उम्र थी।''

''ऐसा तो मत कहो, महाराज! उम्र तो बहुत थी। पचास साठ रुपया महीना पेन्शन मिलती, तो कहीं कुछ काम करके गुजारा हो जाता। पर क्या करें पाँच साल नौकरी से बैठे हो गये और अभी तक कोई कौड़ी नहीं मिली।''

दुःख की कथा सुनने की फुरसत नारद को थी ही नहीं । वह अपने मुद्दे पर आये और बोले, ''माँ यह बताओ कि यहाँ किसी से क्या उनका विशेष प्रेम था, जिसमें उनका जी लगा हो ?''

पत्नी बोली, ''लगाव तो महाराज, बाल बच्चों से ही होता है।''

''नहीं, परिवार के बाहर भी हो सकता है, मेरा मतलब कोई स्त्री...?''

स्त्री ने गुर्राकर नारद की ओर देखा। बोली, ''बको मत, महाराज साधु हो, कोई लुच्चे–लफंगे नहीं हो। ज़िन्दगी भर उन्होंने किसी दूसरी स्त्री को आँख उठाकर भी नहीं देखा ।''

नारद हँसकर बोले, ''तुम्हारा सोचना ठीक ही है। यह भ्रम अच्छी गृहस्थी का आधार है। अच्छा, माता मैं चला।''

व्यंग्य समझने की असमर्थता ने नारद को सती के क्रोध की ज्वाला से बचा लिया।

स्त्री ने कहा,'' महाराज, आप तो साधु हैं, सिद्ध पुरुष हैं। कुछ ऐसा नहीं कर सकते कि उनकी रुकी हुई पेन्शन मिल जाय। इन बच्चों का पेट कुछ दिन भर जायेगा।''

नारद को दया आ गई थी। वह कहने लगे,'' साधुओं की कौन बात मानता है? मेरा यहाँ कोई मठ तो है नहीं । फिर भी मैं सरकारी दफ्तर जाऊँगा और कोशिश करूँगा।''

वहाँ से चलकर नारद सरकारी दफ्तर पहुँचे। जहाँ पहले ही कमरे में बैठे बाबू से उन्होंने भोलाराम के बारे में बातें की । उस बाबू ने उन्हें ध्यानपूर्वक देखा और बोला, ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन ही नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी।''

नारद ने कहा, ''भाई यहाँ तो बहुत से पेपरवेट रखे हैं । इन्हें क्यों नहीं रख दिया ?''

बाबू हँसा, ''आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती। दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबती ..... खैर, आप उस कमरे में बैठे बाबू से मिलिए।''

नारद उस बाबू के पास गये। उसने तीसरे के पास भेजा, तीसरे ने चौथे के पास, चौथे ने पाँचवे के पास। जब नारद पच्चीस–तीस बाबुओं और अफसरों के पास घूम आये, तब एक चपरासी ने कहा, ''महाराज! आप क्यों इस झंझट में पड़ गये। आप अगर साल भर भी यहाँ चक्कर लगाते रहें, तो भी काम नहीं होगा। आप तो सीधे बड़े साहब से मिलिये। उन्हें खुश कर लिया तो अभी काम हो जायेगा।''

नारद बड़े साहब के कमरे में पहुँचे। बाहर चपरासी ऊँघ रहा था, इसलिए उन्हें किसी ने छेड़ा नहीं। उन्हें एकदम बिना विजिटिंग कार्ड के आया देख, साहब बड़े नाराज हुए । बोले, ''इसे कोई मन्दिर–वन्दिर समझ लिया है क्या? धड़धड़ाते चले आये चिट क्यों नहीं भेजी?''

नारद ने कहा, ''कैसे भेजता ? चपरासी तो सो रहा है ?''

''क्या काम है ?'' साहब ने रौब से पूछा।

नारद ने भोलाराम का पेन्शन–केस बतलाया।

साहब बोले, ''आप हैं वैरागी दफ्तरों के रीति–रिवाज नहीं जानते। असल में भोलाराम ने गलती की। भाई यह भी एक मन्दिर है। यहाँ भी दान करना पड़ता है, भेंट चढ़ानी पड़ती है। आप भोलाराम के आत्मीय मालूम होते हैं। भोलाराम की दरख्वास्तें उड़ रहीं हैं। उन पर वजन रखिये।''

नारद ने सोचा कि फिर यहाँ वजन की समस्या खड़ी हो गई। साहब बोले, ''भई सरकारी पैसे का मामला है। पेन्शन का केस बीसों दफ्तरों में जाता है। देर लग ही जाती है। हजारों बार एक ही बात को हजार जगह लिखना पड़ता है, तब पक्की होती है। जितनी पेन्शन मिलती है, उतनी कीमत की स्टेशनरी लग जाती है। हाँ जल्दी भी हो सकती है, मगर.....''. साहब रुके।

नारद ने कहा, ''मगर क्या ? ''

साहब ने कुटिल मुस्कान के साथ कहा, ''मगर वजन चाहिये। आप समझे नहीं। जैसे, आपकी सुन्दर वीणा है, इसका भी वजन भोलाराम की दरख्वास्त पर रखा जा सकता है। मेरी लड़की गाना–बजाना सीखती है। यह मैं उसे दूँगा। साधुओं की वीणा तो बड़ी पवित्र होती है। लड़की जल्दी संगीत सीख गई, तो उसकी शादी हो जायेगी।''

नारद अपनी वीणा छिनते देखकर जरा घबराये। पर फिर संभल कर उन्होंने वीणा टेबल पर रख कर कहा, ''यह लीजिये। अब जरा जल्दी उसकी पेन्शन का आर्डर निकाल दीजिये।''

साहब ने प्रसन्नता से उन्हें कुर्सी दी, वीणा को एक कोने में रखा और घण्टी बजाई। चपरासी हाजिर हुआ।

साहब ने हुक्म दिया, ''बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल लाओ।''

थोड़ी देर बाद चपरासी भोलाराम की सौ–ड़ेढ सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल लेकर आया। उसमें पेंशन के कागजात भी थे। साहब ने फाइल पर नाम देखा और निश्चित करने के लिए पूछा, ''क्या नाम बताया साधुजी आपने।''

नारद ने समझा कि कुछ ऊँचा सुनता है। इसलिए जोर से बोले, ''भोलाराम।''

सहसा फाइल में से आवाज आयी, ''कौन पुकार रहा है मुझे, पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का आर्डर आ गया?''

साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गये। नारद भी चौंके। पर दूसरे ही क्षण बात समझ गये। बोले, ''भोलाराम! तुम क्या भोलाराम के जीव हो?''

''हाँ'' आवाज आयी।

नारद ने कहा, ''मैं नारद हूँ। मैं तुम्हें लेने आया हूँ। चलो, स्वर्ग में तुम्हारा इन्तजार हो रहा है।''

आवाज आयी, ''मुझे नहीं जाना। मैं तो पेंशन की दरख्वास्तों में अटका हूँ। यहीं मेरा मन लगा है। मैं अपनी दरख्वास्तें छोड़कर नहीं जा सकता .....!''

शब्दार्थ

खीज़कर– नाराज़ होकर	लापता– गायब हो जाना
बदहवास– होश में नहीं होना	अभ्यस्त– अभ्यास से कुशल
नगण्य– गिनती के योग्य न होना	दरख्वास्त– प्रार्थना पत्र
क्रन्दन– दुःख से रोने का स्वर	दफ्तर–कार्यालय

अभ्यासार्थ प्रश्न

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''तुम्हारी भी रिटायर होने की उम्र आ गयी'' का क्या अर्थ है?
   (क) तुम बूढ़े हो गये हो।
   (ख) तुम्हारी अक्ल मारी गई है।
   (ग) तुम बेसमझी की बातें करते हो।
   (घ) तुम्हारी श्रम से बचने की आदत हो गई है।
2. ''इन्द्रजाल होना'' मुहावरे का क्या अर्थ है?
   (क) भयभीत होना
   (ख) धोखा होना
   (ग) आश्चर्य होना
   (घ) गर्व होना।

अतिलघूत्तरात्मक प्रश्न

3. कमरे में नारद के एकदम चले जाने पर साहब क्यों नाराज हुए ?
4. भोलाराम के मरने का सही कारण क्या था ?
5. 'पर ऐसा कभी नहीं हुआ था,'' वह कौन सी घटना थी ?
6. साहब ने बड़े बाबू से भोलाराम के केस की फाइल कब मँगवायी?
7. फाइल में से जो आवाज आई वह किसकी आवाज थी ?

लघूत्तरात्मक प्रश्न

8. ''भोलाराम ने दरख्वास्तें तो भेजी थीं, पर उन पर वजन ही नहीं रखा था, इसलिए कहीं उड़ गई होंगी''। बाबू के इस कथन में वजन शब्द से क्या तात्पर्य है?
9. ''भोलाराम का जीव'' कहानी के स्थान पर दूसरा कोई उपर्युक्त शीर्षक प्रस्तावित कीजिए।

10. भोलाराम का जीव कहाँ गया था ? वहाँ रहने का क्या कारण था ?

निबन्धात्मक प्रश्न

11. ''कहानी का सौन्दर्य कथानक में न होकर उसके सहारे उभारे गये तीखे रिमार्क और चुटीले व्यंग्य में है,'' इस कथन की विवेचना कीजिए।

12. भोलाराम के जीव को ढूँढते हुए यदि नारद जी स्वर्ग से न आते तो कहानी के कथानक में क्या अन्तर हो जाता?

वस्तुनिष्ठ प्रश्नों की उत्तरमाला

1. ग

2. ख

•••